दिनांक :- 06-05-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फारूक आजम (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- प्रथम खंड (कला)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

इकाई :- पाँच

पत्र :- एक

अध्याय :- उत्तर वैदिक काल

(1) गर्भधान :- गर्भधारण से पहले

(2) पुंसवन - पुत्र प्राप्ति के लिये मंत्रोच्चारण

(3) सीमंतोन्नयन - गर्भ की रक्षा हेतु तीसरे से आठवें महीने के मध्य इस संस्कार को पूरा किया जाता था। इसमें गर्भवती महिला विशेष खुशी के लिये उसे सजाया सवारा जाता था।

(4) जातकर्म :- जन्म के तत्काल बाद यह संस्कार होता था। इस अवसर पर पिता बच्चे को घृत तथा शहद चटाता था।

Scanned with CamScanner

(5) नामकरण - इंस संस्कार में बच्चे का नाम रखा जाता था। याज्ञवल्क्य के अनुसार जन्म के 11वे दिन जबकि मनु के अनुसार 16वें दिन यह संस्कार किया जाता था।

(6) निष्क्रमन - बच्चे को पहली बार घर से निकल कर सूर्य का दर्शन कराया जाता था। यह जन्म के चौथे सप्ताह में होता था।

(7) अन्य प्राशन - यह जन्म के छठे महीने होता था जिस में बच्चे को पहली बार अन्न खिलाया जाता था।

(8) चूड़ाकरण (चौलकर्म) : यह संस्कार बच्चे के प्रथम वर्ष की समाप्ति अथवा तीसरे वर्ष की समाप्ति से पूर्व किया जाता था। इसमें बच्चे को बालो का मुंडन कर दिया जाता था। इस संस्कार के पीछे भावना थी कि बच्चे को स्वच्छता एंव सफाई का ज्ञान करा सके

(9) कर्णछेद - इस संकार के समय जन्म के 10वे दिन

Scanned with CamScanner

से लेकर पांचवे वर्ष तक किया जाता था। इसमें बच्चे के कान में छेद कर उसे कुंडल पहनाया जाता था। वर्ण के अनुसार कर्ण छेद की सूई के धातु में बदलाव था जैसे क्षत्रिय का कर्ण छेद स्वर्ण सूई से, ब्राह्मण तथा वैश्य का चांदी सूई से तथा शूद्र की लोहे की सूई से कर्णबेधन किया जाता था। यह अनिवार्य संस्कार था। देवल ने व्यवस्था दी है कि जो ब्राह्मण इस संस्कार से रहित होता है उसे भिक्षा नहीं दी जानी चाहिए।

(10) विद्यारम्भ संस्कार - इसकी उम्र संस्कार के घरेलु विद्या की शुरूआत की जाती थी, जिसमें शिक्षक पूर्व दिशा में मुख किये बच्चे में ॐ नमः स्वस्ति आदि लिखवाता था।

(11) उपनयन संस्कार - इसकी उम्र ब्राह्मण के लिये 8 वर्ष क्षत्रिय के लिये 11 वर्ष एवं वैश्य के लिये 12 वर्ष निर्धारित की गई है। उपनयन संस्कार के पश्चात बालक

Scanned with CamScanner

माँ के साथ भोजन करना छोड़ देता है।

(12) वेदारम्भ संस्कार - इस संस्कार का उल्लेख सर्व प्रथम वेदव्यास स्मृति में मिलता है। यह पूर्णतया शैक्षिक संस्कार था जिसका प्रारंभ बालक के गुरु निर्देशन में वेदाध्ययन से होता था।

(13) केशान्त अथवा गोदान - 16 वर्ष की आयु में विद्यार्थी का प्रथम बार दाढ़ी मूँछ बनाया जाता था।

(14) समावर्तन संस्कार - यह संस्कार गुरु आश्रम से अध्ययन समाप्त कर घर लौटने पर होता था।

(15) विवाह संस्कार

(16) अंत्येष्टि संस्कार

दान

वैदिक साहित्य में दान को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। यहाँ दान के भी कई प्रकार निर्धारित किये गये हैं! जैसे -

(1) सामान्य दान - सामाजिक कर्त्तव्य के लिये।

② धर्म दान - धार्मिक उद्देश्य के लिए

③ विशिष्ट दान - इसमें विशिष्ट वस्तुओ का वृहद पैमाने पर किया जाने वाला दान शामिल है। जैसे - गोदान अश्व दान, भूमिदान, तुलादान आदि

④ महादान - इसमें स्वर्ण, घोड़ा, भूमि आदि सब दान दिये जाते है

वैदिक साहित्य —

वैदिक साहित्य में वेद ब्राह्मण, आरण्यक एंव उपनिषद सभी को शामिल किया जाता है! वेद शब्द विद् धातु से बना है जिसका अर्थ होता है जानना अर्थात् ज्ञान। वैदिक साहित्य को दो भागो मे बाँटते है - मंत्र तथा ब्राह्मण मंत्र चारो वेदो में संकलित है और ब्राह्मण का अर्थ होता है, मंत्र संबंधी ज्ञान। ब्राह्मण को हम तीन भांगों में बाँट सकते हैं - ब्राह्मण, आरण्यक तथा उपनिषद।

ऋग्वेद

यह सबसे प्राचीन और महत्वपूर्ण वैदिक ग्रंथ है!

Scanned with CamScanner

इसमें 1017 सूक्त हैं। अगर बालखिल्य सूक्त के ग्यारह सूक्त को जोड़ दियें जायें तो इनकी संख्या 1028 हो जाती है। ऋग्वेद मे प्रार्थनायें संकलित है। यह 10 मंडलो में विभाजित है। दूसरे मंडल से सातवें मंडल को सबसे प्राचीन माना जाता है। दसवां मंडल सबसे नवीन है। ऋग्वेद को होतृ (होता) नामक पुरोहित गाते थे। इसका कार्य होताच्या देवताओं को यज्ञ में बुलाना तथा ऋचाओं का पाठ करते हुए देवों की स्तुति करना।

ऋग्वेद का प्रत्येक मंडल किसी न किसी ऋषि से जुड़ा है दूसरा मंडल गृत्समद भार्गव को, तीसरा मंडल विश्वामित्र को, चौथा मंडल वामदेव को, पाँचवा मण्डल अत्रि को छठा मंडल भारद्वाज को, सातवां मंडल वशिष्ठ को अर्पित है।

चतुर्थ मंडल की रचना मे त्रायदस्यु, अजमीढ़ तथा

पुरमीढ़ नामक तीन राजाओं का भी योगदान रहा है।
आठवां मंडल ऋषि कण्व तथा अंगीरा से जुड़ा है।
नौवा मंडल सोम को समर्पित है। दसवें मंडल में ही
प्रसिद्ध पुरुष सूक्त है जिसमें प्रथम बार शुद्र का वर्णन
मिलता है। इसी मंडल में विवाह सूक्त भी है।
लोपामुद्रा, घोषा, सच्ची, पौलोमी कक्षावृन्ति नामक पाँच
विदुषी स्त्रियों ने ऋग्वेद के कतिपय ऋचाओ की रचना
की थी।
ऋग्वेद में ब्रह्म का अर्थ यज्ञ से है किंतु उपनिषद में इसे
सत्य का तत्स्थ रूप बताया गया है।

सामवेद —

सामवेद के कुल 75 सूक्तों को छोड़कर शेष सूक्त ऋग्वेद
से लिये गए है और उन्हे गाने योग्य बनाया गया है।
यह भारतीय संगीत शास्त्र पर प्राचीनतम पुस्तक थी। इस
का पाठ उद्गाता नामक पुरोहित करते थे।

Scanned with CamScanner